हिंदी गजल का आधुनिकता बोध बेमिसाल : ज्ञानप्रकाश विवेक

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित पुस्तकायन पुस्तक मेले का तीसरा दिन कवयित्रियों और कलाकारों के नाम रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नगाड़ा वादन एवं ओडिसी नृत्य की प्रस्तुतियां हुई। अन्य प्रकाशकों द्वारा भी अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। रविवार की वजह से हर आयु के लोग मेले में भारी संख्या में शिरकत करते नजर आए।

अस्मिता नाम से आयोजित कवयित्री सम्मिलन प्रख्यात ओड़िआ लेखिका यशोधारा मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अंजु रंजन हिंदी, मालविका जोशी हिंदी, नीलांचली सिंह हिंदी, सरोजिनी बेसरा संताली, एवं साथिया सारदामणि तमिल, ने अपनी-अपनी भाषाओं में एवं अनुवाद सहित कविताओं का पाठ किया। गजल संध्या कार्यक्रम ज्ञानप्रकाश विवेक की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें हरेराम समीप, कमलेश भट्ट कमल, सविता चड्ढा और विज्ञान व्रत ने अपनी गजलों का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ज्ञानप्रकाश विवेक ने कहा कि वर्तमान हिंदी गजल में आधुनिकता बोध अपनी सबसे ऊँचाई पर है जो उसकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। उनका एक शेर जो खूब पसंद किया गया वह था दस्तकें दर पर बहुत देर तलक दी उसने, काश एक बार नाम मेरा पुकारा होता। विज्ञान व्रत की पंक्तियां थीं एक सच है मौत भी,वह सिकंदर है तो है। हरेराम समीप ने अद्भुत संवेदना से भरी गजले सुनाई। कमलेश भट्ट कमल की पंक्तियां थी सलीका जिंदगी जीने का आता ही नहीं तुमको कि सुख भी हैं कई इन कष्टों की दुनिया में। सविता चड्ढा की पंक्तियां थीं दुनिया लाख बुरी हो लेकिन हमें यहीं रहना होता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत आद्या सिंह ने लोक वाद्य नगाड़ा की प्रस्तुति दी और शांभवी महेश ने ओडिसी नृत्य में रामाभिषेक और शिवतांडव प्रस्तुत किया।